हिंदी भवन संदेश

(हिंदी प्रचारिणी सभा का सूचना-पत्र)
लोंग माउंटेन – मॉरीशस

NEWSLETTER

Website : hindipracharinisabha.com --- E.Mail: hindipracharinisabha@hotmail.com

वर्ष 8 | अंक 21 | नवम्बर 2016 | संपादक / टंकन / सज्जा : यंतुदेव बुधु | भाषा गई तो संस्कृति गई

सम्पादकीय

वेब के आने से दुनिया छोटी हो गई !

आज ऐसा लगता है वेब तथा इंटरनेट के आने से दुनिया छोटी हो गई । चाहे कोई दुनिया के किसी भी कोने में क्यों न रहता हो, उससे संपर्क रखना केवल दो मिनट की देर है । क्षणभर में समाचार भेज दिया जाता है और प्राप्त भी कर लिया जाता है । विज्ञान आज कहाँ से कहाँ पहुँच गया है । छोटे-बड़े सबके हाथों में मोबाइल फ़ोन दिखता है । दादी-नानी के हाथों में भी मोबाइल फ़ोन देख सकते हैं । इसका यही मतलब हुआ कि प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कोई भी पीछे नहीं रहा । सब समय के साथ चल पड़े हैं । घर में अगर एक दिन इंटरनेट कोनेक्शन न हो तो लगता है कि सारा काम रूक गया हो । आज हम इस साधन से इतना जुड़ गए हैं और इसके इतने आदी हो चुके हैं कि उसके बिना जीवन कठिन लगने लगा है ।

आज सारा काम ऑन-लाइन हो रहा है । संपर्क रखने के साथ-साथ बेचना-खरीदना, टिकट लेना, बिल चुकाना, पढ़ाई-लिखाई, शोध-कार्य आदि प्यार-मुहब्बत भी ऑन-लाइन ही हो रही है । वर्तमान में छोटे-बड़े सभी फेसबुक पर दिखते हैं । फेसबुक से जुड़े लोगों को पलभर में सूचनाएँ प्राप्त हो जाती हैं । लोग फ़ेसबुक पर साहित्यकारों के सृजनात्मक कार्यों का रसास्वादन भी कर पाते हैं । आजकल आप शिक्षक, लेखक, राजनीतिज्ञ, डॉक्टर, इंजिनयर, या फिर प्रोफ़ेसर कुछ भी हों मगर फेसबुकिया न हुए तो कुछ भी न हुए । अगर आप -को शेयर, लाइक या कमैंट करना नहीं आता तो आप इस आधुनिक युग के व्यक्ति नहीं कहलाएँगे । गूगल, याहू आदि नहीं जानते तो समझ लीजिए कि आप आज के युग के अनपढ़ कहलाएँगे ।

हमें फ़ेसबुक व इंटरनेट पर सर्फ़ करते समय सावधान होना चाहिए । लोग फ़ेसबुक पर गलत-सलत व अनाप-शनाप लिखते हैं जिसका बहुत बुरा परिणाम हो सकता है । इस वजह से कई लोगों को कोर्ट-कचहरी का चक्कर काटना पड़ रहा है । छात्रों से आग्रह है कि इन बातों पर ध्यान दें ताकि कहीं इस चंगुल में न फँस जाएँ । किसी भी चीज़ का उपयोग करते समय उसका सही और गलत परिणामों के बारे में एक बार सोच लेना चाहिए । अतः किसी भी काम को सही ढंग से करने पर, न किसी चीज़ का भय रहेगा और न ही अंत में पछताना पड़ेगा । ♦

यंतुदेव बुधु
प्रधान-हिंदी प्रचारिणी सभा

रोड्रिग्स में हिंदी दिवस !

हिंदी दिवस उत्सव में भाग ले रहे मंत्री श्री धनराज शम्भु , कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन के साथ हिंदी संगठन के प्रधान श्री रमणीक चीतू ।

13 अक्टूबर, 2016 को हिंदी भाषा को लेकर रोड्रिग्स के लिए एक ऐतिहासिक दिन सिद्ध हुआ । प्रथम बार के लिए रोड्रिग्स और मॉरीशसवासियों के बीच हिंदी दिवस का उत्सव भव्य रूप से मनाया गया । रोड्रिग्स हिंदी संगठन के प्रधान श्री रमणीक चीतू ने हिंदी दिवस आयोजन का प्रस्ताव आर्य सभा मॉरीशस और हिंदी प्रचारिणी सभा से किया था । साथ में भारतीय उच्चायोग तथा विश्व हिंदी सचिवालय के जुड़ जाने से इस हिंदी-उत्सव में चार चाँद लग गए ।

हिंदी दिवस का श्रीगणेश मॉरीशस के पंडित एवं पंडिताओं द्वारा यज्ञ से हुआ । सर्वप्रथम प्रधान श्री रमणीक चीतू जी ने उत्सव में उपस्थित अतिथियों का स्वागत किया ।

हिंदी प्रचारिणी सभा के महासचिव श्री धनराज शम्भु ने अपने संदेश में सभा का संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत किया तथा सभा की गतिविधियों का भी उल्लेख किया । शम्भु जी ने रोड्रिग्स संगठन को यह आश्वासन दिलाया कि हिंदी प्रचारिणी सभा रोड्रिग्स में हिंदी पढ़नेवालों को सभा अपनी पुस्तकें प्रदान करेगी तथा निरी-क्षण, परीक्षण, प्रमाणपत्र भी प्रदान करेगी । आवश्यकता पड़ने पर भविष्य में कार्यशालाएँ भी आयोजित की जा सकेंगी ।

विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र जी ने अपने संदेश में कहा कि सचिवालय हाथ बटाने के लिए उनके साथ है । भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडे ने सब से पहले माननीय सेज़ क्लेर को रोड्रिग्स के स्वशासन की चौदहवीं वर्षगाँठ के लिए बधाई दी । उन्होंने हिंदी दिवस के कार्यक्रम में शामिल होने पर अपनी प्रसन्नता ज़ाहिर की ।

शेष पृष्ठ 3 पर .....

भारतीय उच्चायेग द्वारा हिंदी दिवस मनाया गया ।

विवरण – श्री धनराज शम्भु

भारतीय उच्चायोग द्वारा आयोजित आई. जी. सी. आई.सी. फ़ेनिक्स में हिंदी दिवस 2016 का कार्यक्रम ता. 8 अक्टूबर को भव्य रूप से मनाया गया । उत्सव के मुख्य अतिथि मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय श्री अनिरूद्ध जगनाथ जी रहे ।

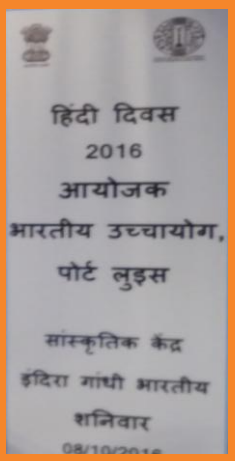

हिंदी दिवस के उपलक्ष्य पर सभागार में अतिथियों के साथ बैठे हुए हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ।

इस अवसर पर शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्री श्रीमती लीला देवी दुखन लछुमन, भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र, शाशी परिषद के सदस्य डॉ. उदयनारायण गंगू, श्री सत्यदेव टेंगर तथा अन्य गणमान्य अतिथिगण उपस्थित थे । हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु, मंत्री श्री धनराज शम्भु तथा कोषाध्यक्ष श्री टहल रामदीन उत्सव में शामिल थे ।

डॉ. विनोद कुमार मिश्र ने अपने वक्तव्य में कहा कि यह सौभाग्य की बात है कि मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय की स्थापना हुई है । निकट भविष्य में सचिवालय का भवन भी बनकर तैयार हो जाएगा जिसका उद्घाटन ग्यारहवें विश्व हिंदी सम्मेलन के अवसर पर 2018 में किया जाएगा । डॉ. उदयनारायण गंगू ने अपने वक्तव्य सूचना व तकनीकी युग में हिंदी के बढ़ते कदम पर केंद्रित किया । उन्होंने संकेत किया कि आज संचार और प्रौद्योगिकी का इतना विकास हुआ है कि हर क्षेत्र में इसका प्रयोग होने लगा है । हमें भी कम्प्यूटर का प्रयोग खुलकर करना चाहिए । हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु ने 'मॉरीशस में हिंदी अध्ययन-अध्यापन की दशा एवं दिशा' पर अपना आलेख पढ़ा, जिसमें उन्होंने हिंदी की पढ़ाई के बाद नौकरी पाने की सम्भावना पर बात की । इसपर हिंदी-प्रेमियों को चिंतन करने के लिए उन्होंने विवश कर दिया । उन्होंने स्कूलों में सम्प्रेषण-कौशल विषय को पाठ्यक्रम में शामिल होने के बारे में भी बात की ।

भारतीय उच्चायुक्त महामहिम श्री अभय ठाकुर ने अपनी भाषा में अभिव्यक्ति करने की सलाह दी । उन्होंने सबको हिंदी बोलने की सलाह दी । उन्होंने अगले हिंदी सम्मेलन में सबके सहयोग की माँग की । अंत में यह भी कहा कि हमें निराश होने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि हिंदी का भविष्य उज्ज्वल है । शिक्षा व मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा मंत्री माननीया श्रीमती लीला देवी दुखन लछुमन नें अपने संदेश में बताया कि यह गर्व और खुशी की बात है कि विश्व हिंदी सचिवालय का भूमि-पूजन हुआ और 2018 तक भवन बनकर तैयार हो जाएगा जहाँ अगला विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन होगा । उन्होंने कहा कि यह भवन एक मंदिर की तरह होगा जहाँ विश्वभर के हिंदी-प्रेमी हिंदी की पूजा करने आएँगे । मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री माननीय श्री अनिरूद्ध जगनाथ ने अपने वक्तव्य द्वारा इस बात पर ज़ोर डाला कि आज हिंदी एक प्रभावशाली भाषा बन गई है । जिसे आधे अरब से ज़्यादा लोग बोल और समझ रहे हैं । उन्होंने कहा कि मॉरीशस में महात्मा गांधी और मणिलाल डॉक्टर तथा बैठकाओं से हिंदी भाषा की प्रगति हुई है । उन्होंने यह भी कहा कि जब अंग्रेज़ों ने हिंदी-शिक्षण पर प्रतिबंध लगाया था तब बिसुनदयाल भाइयों ने आवाज़ उठाई और हिंदी शिक्षण में नई जागृति पैदा हुई । उनका मानना है कि हिंदी भाषा एवं संस्कृति की रक्षा में आर्य सभा तथा हिंदी प्रचारिणी सभा का योगदान रहा है ।

इसी अवसर पर मॉरीशस गणराज्य के प्रधान मंत्री द्वारा दो पुस्तकों का लोकार्पण हुआ । प्रथम श्री राज हीरामन की पुस्तक 'हिंदी का एक और देश' और दूसरी पुस्तक का शीर्षक है 'मॉरीशसीय हिंदी नाट्य परम्परा और सोमदत्त बखोरी' जो डॉ. नूतन पांडे की लिखी हुई थी । कार्यक्रम की समाप्ति निबंध-लेखन-प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण से हुई । कार्यक्रम का संचालन विश्व हिंदी सचिवालय के पूर्व कार्यवाहक महासचिव श्री गुलशन सुखलाल तथा भारतीय उच्चायोग के द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडे द्वारा हुआ । ♦

उत्तमा (साहित्य रत्न) के प्रथम विजेता को – छात्रवृत्ति !

उत्तमा तृतीय खण्ड के छात्रों के लिए एक अच्छी खबर है । वर्ष 2017 से उत्तमा (साहित्य रत्न)में प्रथम स्थान प्राप्त छात्र को हिंदी प्रचारिणी सभा की ओर से हिंदी में उच्च शिक्षा हेतु छात्रवृत्ति प्रदान की जाएगी । यह छात्रवृत्ति मॉरीशसीय नागरिक के लिए होगी और छात्रवृत्ति-विजेता को मॉरीशस के विश्वविद्यालय में ही अपनी पढ़ाई पूरी करनी होगी । सभा विजेता की पढ़ाई का पूरा खर्चा वहन करेगी । हम सभा की ओर से सभी छात्रों को शुभकामनाएँ प्रकट करते हैं ।

इतिहास के पन्नों से .....

1946 के परिचय परीक्षा में उत्तीर्ण छात्रों के नाम !

हिंदी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रथम बार के लिए इलाहबाद, भारत के हिंदी साहित्य सम्मेलन से परिचय परीक्षा 1946 में आयोजित हुई थी । यह परीक्षा श्री जयनारायण रॉय के प्रयास का नतीजा रहा । तब से आज तक हिंदी साहित्य सम्मेलन से परीक्षाओं का आयोजन होता आ रहा है ।

1946 के परिचय की परीक्षा में सफल उन बारह छात्रों के नाम सभा के इतिहास में अंकित है । उनके नाम इस प्रकार हैं :

	नाम		पता
1.	जयरूद्ध	दोसिया	ले मारियान
2.	कृष्ण मूर्ति	रघुनन्दन	सूरिनाम
3.	खेमराज	गौरिशंकर	कासतेल
4.	गयादीन	गोकुलसिंह	कात्र बोर्न
5.	राजमन	राधाकृष्णा	लावाँचीर
6.	मधुसूदन	रामव्यास	क्रेव केर
7.	सुग्रीम	हीरामन	सूरिनाम
8.	बासुदेव	हीरामन	सूरिनाम
9.	बौद्धनाथ	शर्मा	प्लेन मानयाँ
10.	बलदेव	डोमन	लोंग माउंटेन
11.	महादेव	छेदी	सूरिनाम
12.	ब्रह्मादेब	जनार्देव	सूरिनाम

श्री जयरूद्ध दोसिया के साथ दाईं ओर उस समय के सभा-मंत्री श्री सुरुज प्रसाद मंगर भगत ।

इस तरह प्रथम बार परिचय कक्षा बाद 1956 से प्रथमा, 1963 से मध्यमा (विशारद) तथा 1965 से उत्तमा (साहित्य रत्न) की परीक्षाओं का आयोजन होने लगा । इन परीक्षाओं में छात्रों ने अपनी गहन रूचि दिखाई और भारी संख्या में छात्र इनकी तैयारी करने लगे । इन्हीं परीक्षाओं में सफलता प्राप्तकर कइयों को सरकारी स्कूलों में शिक्षक बनने का अवसर प्राप्त हुआ । इनमें से कई हिंदी-साहित्यकार बने और न जाने कितने हिंदी के विद्वान हुए ।

छात्रों के प्रोत्साहन के लिए इन परीक्षाओं में प्रथम दस में स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया जाता है, तथा प्रथम स्थान पर आनेवाले को नकद राशि भी दी जाती है । मध्यमा तथा उत्तमा के प्रथम स्थान प्राप्त छात्रों को एक-एक शिल्ड भी साथ में प्रदान किया जाता है ।

मॉरीशस सरकार द्वारा इन परीक्षाओं को मान्यता प्राप्त है और वर्ष 2004 से उत्तमा (साहित्य रत्न) को 'डिप्लोमा इन हिंदी' का दर्जा दिया जाता है । ♦

भारत की संस्था- "विश्व हिंदी परिषद" द्वारा श्री टहल रामदीन सम्मानित ।

विश्व हिंदी परिषद के सदस्यों तथा भारतीय उच्चायोग की द्वितीय सचिव डॉ. श्रीमती नूतन पांडे के साथ सम्मान पाते हुए श्री टहल रामदीन ।

1 अक्टूबर 2016 को त्रिओले के सेवासदन सभागार में भारत की 'विश्व हिंदी परिषद'तथा 'त्रिओले नोर्जन आर्टिस्ट' संस्थाओं की ओर से आयोजित एक सम्मान समारोह के अंतर्गत श्री टहल रामदीन को 'हिंदी सेवी सम्मान' से विभूषित किया गया । उस अवसर पर कई गणमान्य अतिथि तथा हिंदी प्रेमी उपस्थित थे । 'विश्व हिंदी परिषद'के निदेशक श्री खांडवे ने संस्था के उद्देश्यों के बारे में बताते हुए कहा कि हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए ऐसी गतिविधियाँ आवश्यक होती हैं । उस अवसर पर कई अन्य महानुभावों को भी सम्मानित किया गया, जिनमें श्री राजेश सिबुआ भी रहे जो नाटक के क्षेत्र में काफ़ी कार्यशील हैं । श्री राज हीरामन, श्री सिपोल, डॉ. श्रीमती नूतन पांडे, राजेन सदा-सिंह आदि को भी हिंदी सेवा के लिए सम्मानित किया गया । ♦

प्रथम पृष्ठ से .....

माननीय सेज़ क्लेर ने अपने भाषण की शुरुआत में ही सबको चौंका दिया । उन्होंने हिंदी शब्द में "नमस्ते" कहा और आगे कहा कि "मैं तुम सबसे प्यार करता हूँ और मैं हमेशा से हिंदी बोलनेवालों के साथ हूँ ।" इन शब्दों से उन्होंने सबका दिल जीत लिया । उन्होंने बताया कि टीवी पर चलनेवाले हिंदी कार्यक्रमों की सराहना की ।

मॉरीशस गणराज्य के उप-राष्ट्रपति महामहिम श्री बारलेन वयापुरी ने अपने संदेश में कहा कि ऐसे ऐतिहासिक कार्यक्रम में भाग लेकर वे अति प्रसन्न हुए । उन्होंने कहा कि भाषा माँ होती है, जन्म देनेवाली तथा धरती माँ की तरह । उन्होंने कहा कि आज संसार में 1.3 अरब लोग हिंदी बोलते हैं, हमारे प्रधान मंत्री ने हिंदी भाषा को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने के प्रयास में अपनी स्वीकृति दी है ।

होटल के मालिक श्री बिसुन मंगरू ने धन्यवाद ज्ञापन किया और अपना योगदान देने के लिए इच्छा प्रकट की । रोड्रिग्स के छात्रों की ओर से एक सांस्कृतिक कार्यक्रम भी पेश किया गया । इस आयोजन से हिंदी के प्रति एक नयी जागृति पैदा हुई ।♦

विवरण - श्री धनराज शम्भु

चित्रवाली में .....

8 नवम्बर 2016 को हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रांगण में हिंदी साहित्य आकादमी–मॉरीशस तथा जी. एस. युनिवर्सिटी–शिकोहाबाद, भारत के मिले–जुले सहयोग से आयोजित पी. एच .डी के शोधार्थियों के लिए एक कार्यशाला तथा पत्रकारिता पर आधारित एक प्रमाणपत्र–वितरण समारोह के दौरान लिए गए चित्र में आशिता रघु को प्रमाणपत्र प्रदान करते हुए कुलपति प्रो. हरि मोहन, साथ में खड़े श्री यंतुदेव बुधु, श्री विनय भरद्वाज। बैठे हुए श्री धनराज शम्भु तथा श्री टहल रामदीन ।

8 नवम्बर 2016 को साहित्यिक सांस्कृतिक शोध संस्था–मुम्बई, तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के मिले–जुले सहयोग से हिंदी भवन के सभागार में एक संगोष्ठी का आयोजन हुआ । इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में मॉरीशस तथा भारत के कई विद्वान शामिल हुए । मंच पर विराजमान, दाईं ओर से – प्रो. हेमराज सुन्दर, डॉ. विनय भरद्वाज, प्रो. हरि मोहन, प्रो.प्रदीप सिंह, श्री यंतुदेव बुधु तथा श्री धनराज शम्भु ।

ता. 9 नवम्बर 2016 को गोल्ड क्रेस्ट होटल, कात्र बोर्न में आयोजित एक संगोष्ठी में कविता सुनाते हुए सभा के मंत्री श्री धनराज शम्भु । मंचासीन शिकोहाबाद–भारत के कुलपति प्रो. हरि मोहन, विश्व हिंदी सचिवालय के महासचिव डॉ. विनोद कुमार मिश्र, महात्मा गांधी संस्थान की निदेशिका डॉ. श्रीमती विदोत्मा कुन्जल तथा हिंदी प्रचारिणी सभा के प्रधान श्री यंतुदेव बुधु । सभागार में उपस्थित मॉरीशस तथा भारत के कई हिंदी–विद्वानों ने संगोष्ठी में भाग लिया ।

व्याकरण की सही जानकारी !

व्याकरण वह विधा है जिसके द्वारा भाषा का शुद्ध बोलने व लिखने के नियमों का बोध कराने का शास्त्र समझा जाता है । यह भाषा के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होता है । अत : व्याकरण भाषा की व्यवस्था को बनाए रखने का काम करता है । हिंदी भाषा बोलते व लिखते समय हम लोगों से त्रुटियाँ रह जाती हैं । इन त्रुटियों को सुधारना आवश्यक है ताकि हम आनेवाली पीढ़ी को शुद्ध हिंदी भाषा की जान–कारी दे सकेंगे । पेश है 'हिंदी साहित्य सम्मेलन' द्वारा पत्र 'राष्ट्रभाषा संदेश' में प्रकाशित 'हिंदी–शब्दों का अशुद्ध वाचन'लेख से कुछ अंश ।

1. **अन्तर्राष्ट्रीय** – किसी सन्धि या समास में र के पूर्व र के हलन्त रहने पर वह पूर्व वर्ण को दीर्घ कर देता है; जैसे नीरोग. नीरव आदि । उसी प्रकार अन्तरराष्ट्रीय सही प्रयोग और उपयुक्त है ।

2. **उपरोक्त** – यह शब्द हिंदी में असमस्त रहने पर 'ऊपर' के रूप में प्रयुक्त होता है । समस्त पद में ऊपरोक्त न होकर, उपरोक्त लिखा जाता है । संस्कृत में 'ऊपर' को उपरि लिखा जाता है – 'उपरि+उक्त की सन्धि होने पर 'उपर्युक्त' बनता है । अत : उपर्युक्त लिखना उचित है ।

3. **महत्व** – महत् शब्द में त्व या तल् प्रत्यय लगाने पर महत्त्व और महत्ता बनेगा । किन्तु 'महानता' तथा बिना द्वित्व किए 'महत्व' लिखा जा रहा है । महत् +त्व की सन्धि में महत्त्व बनेगा । अत : महत्व गलत है और महत्त्व सही । सौजन्यता में प्रत्यय लग चुका है अत : (ता) लगाना उचित नहीं है , साम्य, सौजन्य, सौन्दर्य ही सही है ।

4. **आवागमन** – इसका विच्छेद है आव+आगमन । अर्थात आगमनागमन । वस्तुतः जिस अर्थ में यह शब्द प्रयुक्त होता है, उसमें 'गमन' और 'आगमन' का भाव निहित है अतः 'गमनागमन' उचित है ।

5. **सुस्वागतम्** – जिस प्रकार एक अर्थ देनेवाले या वही प्रत्यय किसी शब्द के आगे एक साथ बहीं लगाए जाते उसी प्रकार एक ही उपसर्ग शब्द के पूर्व दो बार नहीं प्रयुक्त होता । स्वागतम में एक बार 'सु' उपसर्ग का प्रयोग हो चुका है तब आगत के पूर्व सु–सु का प्रयोग करना उचित नहीं ।

6. **श्रेष्ठतम** – (सर्वोच्च) को द्योतित करने के लिए श्रेष्ठ ही पर्याप्त है, तम की कोई आवश्यकता नहीं है । 'तम' प्रत्यय 'अन्धकार' का भी वाचक है । अतः श्रेष्ठ, वरिष्ठ, और कनिष्ठ में तम या 'तर'लगाना नहीं चाहिए ।

इस प्रकार हिंदी को विकृत करनेवाले अनेक शब्द हैं, जिनपर विचार करना ज़रूरी है । संस्कृत भाषा के अनेक शब्द हिंदी में अशुद्ध रूप में प्रयुक्त हो रहे हैं, जिनसे हिंदी भाषा बिगड़ती जा रही है । अंत में हलन्त अक्षर का प्रयोग संस्कृत में होता है । कई ऐसे शब्द हैं जिनका हिंदी–करण हो गया है, उनमें हलन्त का प्रयोग नहीं होना चाहिए । ♦

सम्मेलन की परीक्षाएँ (परिचय से उत्तमा तक) 19 से 23 दिसम्बर के बीच होने जा रही हैं । हम सभा की ओर से सभी छात्रों को शुभकामनाएँ प्रकट करते हैं तथा सभी को नये वर्ष 2017 की मंगलकामनाएँ पेश करते हैं ।